इकाई 34 चित्रकला और ललित कलाएं

इकाई की रूपरेखा

34.0 उद्देश्य

सांस्कृतिक मूल्य प्रायः चित्रकला और ललित कलाओं के माध्यम से प्रतिबिंबित होते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद **आप** :

- सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में चित्रकला के विकास का उल्लेख कर सकेंगे,
- चित्रकला की विभिन्न शैलियों और तकनीकों पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- विभिन्न क्षेत्रों की चित्रकला में विषयगत परिवर्तनों का उल्लेख कर सकेंगे, और
- मुगल दरबार और अन्य प्रान्तीय राज्यों में संगीत, नृत्य और नाटक आदि ललित कलाओं के विकास को रेखांकित कर सकेंगे।

34.1 प्रस्तावना

16 वीं शताब्दी, खासकर इसके उतरार्द्ध में भारत में चित्रकला और संगीत के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। अकबर ने अपने शासन के दौरान ललित कलाओं के विकास को **उदारतापूर्वक** प्रोत्साहित किया। उसके उत्तराधिकारियों ने भी इन कलाओं में गहन **रुचि** दिखाई और 17 वीं शताब्दी का अंत होते-होते मुगल दरबार में चित्रकला और संगीत अपने अभूतपूर्व उत्कर्ष पर पहुंच गया।

इसके साथ-साथ दक्खन में मुगल प्रभाव से काफी कुछ स्वतंत्र चित्रकला और संगीत की एक अलग परम्परा विकसित हो रही थी। बाद में, 18 वीं शताब्दी में मुगल दरबार के स्थान पर राजस्थान और पंजाब जैसे क्षेत्रीय राज्य चित्रकला को संरक्षण देने लगे।

इस इकाई में हम चित्रकला और विभिन्न ललित कलाओं की इन विभिन्न परम्पराओं का अध्ययन करेंगे।

34.2 पृष्ठभूमि

इस भाग में हम उस पृष्ठभूमि की चर्चा करेंगे जिसमें चित्रकला का अत्याधिक विकास हुआ। विकास हुआ।

34.2.1 पन्द्रहवीं शताब्दी में चित्रकला

अभी तक यह विश्वास किया जाता था कि दिल्ली सल्तनत में चित्रकला का विकास नहीं हुआ और मुगल काल में तैयार हस्तलिखित दस्तावेजों में प्राप्त चित्रकला की परंपरा वस्तुतः कई शताब्दियों के बाद (दसवीं शताब्दी के अंत के बाद) पुनः प्रारंभ हुई। एक प्रकार से यह चित्रकला का पुनरुत्थान था। परन्तु नई खोजों और शोधों से कुछ नये तथ्य सामने आये हैं :

- 13 वीं और 14 वीं शताब्दियों में भित्ति चित्रों **की** और कपड़ों पर चित्रकारी करने की जीवंत परंपरा थी,
- 14 वीं शताब्दी तक **कुरान** की आयतों को चित्र रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा साथ-साथ चल रही थी, और
- संभवतः 15 वीं शताब्दी के आरंभ में फारसी और अवधी भाषा की पांडूलिपियों में चित्रकारी की परम्परा की भी जानकारी मिलती है।

15 वीं और 16 वीं शताब्दी में तैयार की गई कई महत्वपूर्ण **पांडुलिपियों** की हमें जानकारी मिलती है जिनमें चित्र भी बने हैं। इनमें से कुछ कृतियां क्षेत्रीय राजाओं के दरबार में तैयार की गई थीं और कुछ का निर्माण स्वतंत्र संरक्षकों द्वारा करवाया गया था। पहली कोटि में निम्नलिखित की चर्चा की जा सकती है :

क) **सादी की बोस्तां** में हाजी महमूद के बनाए चित्र

ख) **'नेमत नामा'** (पाककला की पुस्तक) और

ग) मोहम्मद शादिआबादी कृत **मिफताह उल फ़ुज़ला।**

15 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मांडू **(मालवा) में इन पांडुलिपियों में चित्रों का समावेश** किया गया था। लोरे चंदा (अवधी) इस प्रकार की चित्रित पांडूलिपि का उत्तम उदाहरण है जिसका संबंध दरबार से नहीं था बल्कि इसे अपने संरक्षक के लिए तैयार किया गया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत में मुगलों के आगमन से ठीक पहले चित्रित **पांडुलिपियों** की परंपरा मौजूद थी। कागज के उपयोग के कारण इस प्रकार की चित्रकारी संभव हो सकी।

34.2.2 आरंभिक मुगलकालीन चित्रकला

भारत में मुगल शासन के संस्थापक बाबर (1526) ने केवल चार वर्षों तक राज्य किया। चित्रकला के विकास में उसका कोई योगदान नहीं रहा। उसके उत्तराधिकारी हुमायूं का भी अधिकांश समय अपने विरोधियों से लड़ते हुए बीता और 1540 में शेरशाह ने उसे भारत से बाहर खदेड़ दिया। अपने निष्कासन के दौरान वह ईरान के शाह **तहमस्प के दरबार में रहा** और वहीं चित्रकला के प्रति उसके रुझान का विकास हुआ। वह वहां की कला से इस कदर प्रभावित हुआ कि उसने ईरान के दो कलाकारों मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस समद से **अपने** लिए पांडूलिपियां तैयार करने के लिए निवेदन किया। भारत लौटने पर हुमायूं उन्हें अपने साथ लेता आया।

सादी का बोस्तान

नेमतनामा

मुगलकालीन चित्रकला के विकास में हुमायूं का योगदान महत्वपूर्ण है। हुमायूं के शासनकाल में मुगल चित्रकला की कई **महत्वपूर्ण विशेषताओं का उद्‌भव हुआ। तैमूर घराने के** राजकुमार शीर्षक से बनाया गया चित्र हुमायूं के काल की अनुपम देन है। यह 1550 ई. के आसपास बनाया गया था। इसे कपड़े पर बनाया गया है। इसकी लंबाई 1.15 वर्ग मीटर है। ईरानी चित्रकला में भी इतना लंबा चित्र मिलना अपवाद था। ऐसा माना जाता है कि यह मंगोल परम्परा की देन है जिसमें वे अपने तम्बुओं पर चित्र बनाया करते थे।

34.3 अकबर के शासनकाल में मुगल शैली का विकास

अकबर का कलाओं के प्रति अत्याधिक रुझान था। मुगल चित्रकला का अन्य शैलियों से भिन्न एक अलग स्कूल के रूप में स्थान प्राप्त करना अकबर की इसी रुचि का परिणाम था।

चित्रकला पर अकबर के विचार

किसी चीज की प्रतिकृति बनाने को तस्वीर कहते हैं। महामहिम ने अपनी युवावस्था से ही इस कला के प्रति गहरी रुचि दिखाई थी और इसे सभी प्रकार का प्रोत्साहन दिया था, क्योंकि वे उसे अध्ययन के साथ-साथ तृप्ति का साधन भी मानते थे। इस प्रकार यह कला फलने-फूलने लगी और कई चित्रकारों ने खूब नाम कमाया। **दरोगा** और लिपिक महामहिम के समक्ष प्रत्येक सप्ताह विभिन्न चित्रकारों के चित्र पेश किया करते थे, उसके बाद वे (अकबर) उन्हें उनके कार्य के अनुसार पुरस्कार देते थे या वेतन में प्रतिमाह वृद्धि करते थे। चित्रकारी के लिए आवश्यक सामग्री में (इस समय) काफी प्रगति हुई। इन सामानों का मूल्य बड़ी सावधानी से आंका जाता था। रंग के मिश्रण की तकनीक में विशेष रूप से विकास हुआ था। इस प्रकार चित्रों की बनावट में अभूतपूर्व विकास हुआ। इस काल में बेहतरीन चित्रकार हुए और उनकी उत्कृष्ट कलाओं को यूरोप के **विश्वविख्यात** चित्रकारों की रचनाओं के समक्ष रखा जा सकता है। सूक्ष्मता से चित्रण, सुंदर बनावट और उन्मुक्त प्रस्तुति आदि से इस युग की चित्रकला अतुलनीय हो गई, चित्रकारों ने जड़ पदार्थ में भी जीवन डाल दिया। इस युग में सैंकड़ों चित्रकार चित्रकला के महारथी थे, अच्छे और उत्कृष्ट कलाकारों की संख्या काफी बड़ी थी। यह बात विशेषत: हिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में सही है, उनके चित्र कल्पना के अनुपम नमूने हैं। पूरे विश्व में उन जैसे कम कलाकार ही पाए जाते हैं।
स्रोत : (अबुल फ़ज़ल, आइन-ए अकबरी)

34.3.1 राजकीय चित्रशाला की स्थापना

अकबर के शासनकाल में पहला प्रमुख पांडुलिपी चित्रण **हमजा नामा** की चित्रकारी थी। इसकी शुरुआत 1562 में हुई जिसके लिए कई दरबारी चित्रकार नियुक्त किए गए।

चित्रकारों के कार्य करने के स्थान को तस्वीर खाना कहा जाता था। हालांकि अबुल फज़ल ने केवल सत्रह कलाकारों का उल्लेख किया है, परन्तु हमारी जानकारी के अनुसार यह संख्या काफी बड़ी थी। एस.पी. वर्मा (**आर्ट एंड मैटीरियल कल्चर इन द पेंटिंग्स ऑफ अकबर्स कोर्ट** विकास प्रकाशन, नई दिल्ली 1978) ने अकबर की शिल्पशाला में काम करने वाले 225 कलाकारों की सूची तैयार की है। ये कलाकार कई जगहों से आए थे परन्तु इनमें हिंदुओं की संख्या अधिक थी। एक रोचक तथ्य यह है कि निम्न जाति के कलाकारों को भी उनकी प्रतिभा के आधार पर राजकीय कलाका का दर्जा दिया गया था। इस दृष्टि से पालकी ढोने वाले कहार के बेटे दसवंत का उल्लेख विशेष रूप से किया जाना चाहिए। कलाकारों की सहायता के लिए अनेक मुलम्मासाजी करने वाले और पृष्ठ तैयार करने वाले होते थे। कलाकार नक़द वेतन प्राप्त कर्मचारी थे। एस.पी. वर्मा का मानना है कि शिल्पशाला में न्यूनतम वेतन 600 से 1200 दाम (40 **दाम** = 1 रुपया) थी।

कुछ चित्रों पर दो चित्रकारों के नाम पाए गए हैं। यहां तक कि कभी-कभी तीन चित्रकार मिलकर एक चित्र बनाते थे। **अकबरनामा** का एक चित्र चार चित्रकारों ने मिलकर बनाया था। इस प्रकार चित्रकला एक सामूहिक कार्य के रूप में भी सामने आती है। चित्र का आरेख निर्माण और रंगाई, चित्रकारों के दो अलग-अलग समूहों द्वारा की जाती थी। जहाँ तीन कलाकार काम कर रहे होते थे, वहां एक कलाकार बाहरी रूपरेखा बनाता था, दूसरा इसके चहेरे को और तीसरा बाकी हिस्से को रंगता था। हमें इस बात का पता नहीं है कि वह जटिल कार्य किस ढंग से सम्पन्न होता था। संभवतः इस प्रकार के दल में आरेखन और रंगाई अलग-अलग कलाकारों द्वारा की जाती होगी।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है लिपिकों की सहायता से **दरोगा** शिल्पशाला की देखरेख करता था। कलाकारों को चित्रकारी का सामान उपलब्ध कराना और उनके कार्य की प्रगति पर नजर रखना उसका मुख्य दायित्व था। वह समय-समय पर सम्राट के सामने कलाकारों की कृतियों को पेश किया करता था।

34.3.2 शैली और तकनीक

अकबर के दरबार में बनाए गए चित्र मुगल कला की प्रतिनिधि रचाएं हैं परन्तु इस कला की शैली और तकनीक में बराबर विकास होता रहा। आरंभिक चरण के चित्रों पर ईरानी प्रभाव स्पष्ट है, जिसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

- सममिति संघटन,
- आकृतियों की प्रतिबंधित गतिशीलता,
- चित्रों की रेखाओं की उत्कृष्टता,
- स्थापत्यगत स्तंभों का सतही चित्रण, और
- भवनों का आलंकारिक चित्रण।

बाद में चित्रकला ने अपना एक विशेष स्वरूप निर्मित किया। मुगलकला का वह रूप ईरानी और भारतीय परम्पराओं से निर्मित हुआ जिसमें यूरोपीय प्रभाव की भी थोड़ी बहुत झलक देखने को मिलती है।

34.3.3 मूलभूत विशेषताएं

अकबर द्वारा शिल्पशाला स्थापित किए जाने के पन्द्रह वर्षों के भीतर मुगल शैली की अपनी पहचान बन गई। अगले एक दशक में अर्थात 1590 तक इसने एक विशेष स्वरूप ग्रहण कर लिया जिसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :

- प्रकृतिवाद और लय,
- प्रतिदिन प्रयोग किये जाने वाले भारतीय परिधानों का चित्रण,
- प्रमुख चित्र की पृष्ठभूमि में कई उप दृश्यों का चित्रण,
- अभूतपूर्व क्रियाशीलता तथा अत्याधिक गतिशीलता, तथा
- फूल-पत्तियों और पेड़-पौधों का अद्‌भुत चित्रण।

यहां इस तथ्य पर बल दिया जाना चाहिए कि अकबर के काल में निखरी चित्रकला में भारतीय और ईरानी शैली का तो समन्वय था ही साथ ही साथ इसकी अपनी मौलिकता भी थी। इन चित्रों में गति और क्रिया का विशेष महत्व है जो न तो भारतीय पूर्व मुगलकालीन कला में मिलता है और न ही ईरान में ही ऐसी कला का प्रचलन था (**आर्ट एंड कल्चर**, सं.ए.जे.कैसर और एस.पी.वर्मा, जयपुर, 1993)।

अकबर के काल में बने चित्र ऐतिहासिक विषयवस्तु के कारण फारसी परम्परा के साथ-साथ भारतीय शैली से भी अपनी **विशिष्टता** प्रदर्शित करते हैं। मुख्य रूप से प्रयुक्त दो विषयवस्तु हैं:

तूतीनामा

तारीख-ए खानदान-ए तैमूरिया

बाबरनामा

- दरबार की प्रतिदिन की घटनाओं का चित्रण, और
- छवि चित्रण।

हालांकि ईरान में छवि चित्रण बनाने की परम्परा थी परन्तु ऐतिहासिक घटनाओं के चित्रण का आयाम बिल्कुल नया था। घटना ऐतिहासिक हो या चित्रकार की शुद्ध कल्पना, शिकार या युद्ध के दृश्यों का अंकन करते समय चित्रकार एक बने बनाए सूत्र का प्रयोग करता था जैसा कि 1580 के आसपास चित्रांकित किए गए **तैमूरनामा** में किसी खास घटना का चित्रण करते हुए भी चित्रकार घटना से असंबद्ध दिखाई देता है। इसमें कलाकारों ने अपने मन में पूर्व स्थापित परिकल्पना के अनुसार किलों का आकार, नदी पार करने, दर्शकों अथवा युद्ध संबंधी दृश्यों का चित्रण किया है। **अकबरनामा** में भी कलाकारों ने इन दृश्यों की नकल की है या उन्हें अपने अनुसार ढ़ाल लिया है। कोई दृश्य पहले से उपलब्ध न होने की स्थिति में चित्रकार ही एक दृश्य की योजना करता प्रतीत होता है और कुछ चित्रकार इस प्रकार के नूतन प्रयोग करने में सक्षम दिखाई देते हैं।

हमने यहां ऐतिहासिक क्रम में इस काल में चित्रांकित प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख किया है।

ग्रंथ	तिथि
हमजानामा	: लगभग 1562-1580 ई.
अनवार ए सुहेली	: 1570 ई.
तूतीनामा	: लगभग 1570-1580 ई.
तारीख ए खानदान ए तैमूरिया	: **लगभग 1570-1590 ई.**
बाबरनामा	: **लगभग 1570-1600 ई.**
अकबरनामा	: **लगभग 1570-1600 ई.**
तारीख ए अल्फी	**लगभग 1570-1600 ई.**
रज़्मनामा	: 1582 ई.

रज़्मनामा : पांडव दरबार

अकबरनामा : इमारत का निरीक्षण करते हुए सम्राट अकबर

बोध प्रश्न 1

1) आरंभिक मुगल शासकों के अधीन चित्रकला के विकास पर 50 शब्दों में टिप्पणी कीजिए?

....

....

....

....

....

2) राजकीय शिल्पशाला में चित्रकारों द्वारा सामूहिक चित्रण की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

3) मुगलकालीन शैली की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

34.4 जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में विकास

जहांगीर और शाहजहां के काल में मुगलकालीन चित्रकला अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई। जहांगीर जब राजकुमार था तब से ही वह चित्रकारी में रुचि रखता था। अकबर की विशाल शिल्पशाला से अलग उसकी अपनी चित्रशाला थी। जहांगीर शिकार के दृश्यों, पक्षियों और फूलों की चित्रकारी पसंद करता था। उसने छवि चित्रण की परम्परा भी जारी रखी। शाहजहां के समय की चित्रकारी में रंगों की चमक बढ़ गई और अलंकरण के लिए सोने का उपयोग होने लगा। आगे आने वाले उपभागों में हम जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में मुगल चित्रकला की नयी शैलियों और विषयगत विविधताओं का अध्ययन करेंगे।

34.4.1 नई शैलियों का उदय

जहांगीर के शासनकाल (1605-27) में छवि चित्रण की तुलना में पांडुलिपि चित्रण का महत्व कम हो गया। एम.सी.बीच (**मुगल एंड राजपूत पेंटिंग**, कैम्ब्रीज विश्वविद्यालय प्रेस, 1992) के अनुसार जहांगीर चित्रकारी में व्यक्तिगत रुचि लेता था और उसका हस्तक्षेप राजकीय चित्रशाला के कार्यकलापों में भी था। स्पष्टत: कला संबंधी निर्णय स्वयं सम्राट के होते थे। परिणामस्वरूप चित्रकला में वह अपने द्वारा प्रतिपादित शैली का समावेश कर सका। 17 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल चित्रकला की शैली में दो नये तत्व शामिल हुए, ये इस प्रकार हैं।

- जहांगीर की चित्रकला में रूपवादी शैली की प्रधानता है। इसमें चित्र को यथार्थवादी बनाने और समकालीन यथार्थ को हू-ब-हू चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है।
- इस काल के चित्रों में चौड़े हाशिए का प्रयोग किया गया, जिन्हें फूल-पत्तियों, पेड़ पौधों और मनुष्य की आकृतियों से भव्य रूप में अलंकृत किया गया है।

34.4.2 विषयगत भिन्नताएं

जहांगीर प्रकृति प्रेमी था। जब भी वह अनूठे जानवर या पक्षी देखता था तो उसका कलाकार मन तत्काल उसे चित्रित कराने के लिए बेचैन हो उठता था। उसके जमाने में पक्षियों और पशुओं का बड़ा ही जीवंत चित्रण हुआ है।

शाहजहां स्थापत्य कला का महान संरक्षक था, परन्तु उसने चित्रकला की भी उपेक्षा नहीं की। उसके समय में भी छवि चित्रण बनाये जाते थे, चित्रों का संग्रह तैयार किया जाता था और पांडूलिपि चित्रण बनाये जाते थे। इसके अलावा प्रणय दृश्यों और महिलाओं के चित्र भी बनने लगे। इस काल की चित्रकला में पशु के अध्यारोपण और कलाबाजी के दृश्यों को भी स्थान मिला।

जहाँगीर का छवि चित्र

शाहजहाँ का छवि चित्र
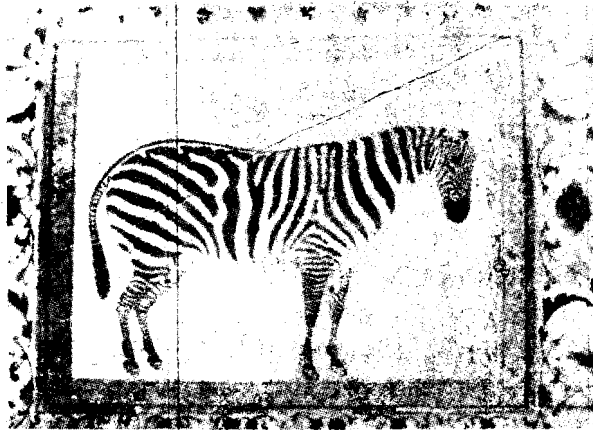
प्राकृतिक चित्रकला : मंसूर द्वारा चित्रित ज़ीबा

34.4.3 अंतिम चरण

शाहजहां के उत्तराधिकारी औरंगजेब के काल में कलाएं उपेक्षित रहीं। चित्रकारी पूरी तरह रुकी नहीं परन्तु इसे सम्राट का संरक्षण प्राप्त होना समाप्त हो गया और उसका क्षेत्रवादी स्वरूप सीमित हो गया। राजपूत राजाओं के दरबारों में कुलीनों और उनके संबंधियों के छवि चित्रण बनाए जाते रहे। चित्रकला संबंधी राजपूतों के अनेक दस्तावेज (**तस्वीरखाना** दस्तावेज) राजस्थान के राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में आज भी उपलब्ध हैं। वहां मुगल सम्राट के अभियान संबंधी कुछ रोचक चित्र रखे हुए हैं। इन चित्रों में चित्रकार की कला उत्तम है परन्तु अब चित्रकारी औपचारिकता मात्र रह गई और उसमें पहली जैसी जीवंतता नहीं रह गई।

बाद में मौहम्मद शाह (1719-48 ई.) के शासनकाल में प्रणय के आकर्षक दृश्यों की चित्रकारी शुरू हुई। परन्तु इस समय तक राजकीय चित्रशाला के अधिकांश चित्रकार प्रांतीय शासकों के दरबारों में जा चुके थे। मुगल कला के पतन से प्रांतीय शैली को लाभ पहुंचा।

34.5 मुगल चित्रकला पर यूरोप का प्रभाव

इस इकाई में पहले ही मुगल चित्रकला की मिली-जुली प्रकृति का उल्लेख किया जा चुका है। अपने बाद के चरण में, विशेषकर 17 वीं शताब्दी के दौरान मुगल चित्रकला पर यूरोपीय कला का प्रभाव दिखाई देता है। मुगल चित्रकारों ने यूरोप की चित्रकला से विषयवस्तु के साथ-साथ तकनीक को भी अपनाया। ए.जे.कैसर के अनुसार मुगल चित्रकार यूरोपीय चित्रकला की नकल किया करते थे और कभी-कभी इसे पुनर्व्याख्यायित भी किया करते थे। इसके साथ-साथ यूरोप के चित्रकारों के चित्रों के संग्रह जहांगीर, दाराशिकोह और कई मुगल कुलीनों के पास मौजूद थे (ए.जे. कैसर, **इंडियन रेसपोंस टु यूरोपीयन टेक्नॉलाजी एंड कल्चर**, 1982)।

यूरोपीय चित्र जब मुगल दरबार में लाये गए तो आरंभ में बहुत से चित्रकार इसकी नकल करने की ओर प्रवृत हुए। समकालीन यूरोपीय यात्री बताते हैं कि इस प्रकार की नकल में एक प्रकार की सहजता थी। परन्तु मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला की विषयवस्तु को अपनाकर नए प्रयोग भी किए।

मुगल चित्रकला में त्रिआयामी चित्रों का भी विशेष महत्व है। स्पष्टतया इन पर यूरोपीय तकनीक का प्रभाव है। मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला के प्रकाश और छाया के प्रभाव को अंकित करने की शैली भी अपनाई। इनका उपयोग अधिकतर रात के दृश्यों के अंकन के लिए होता था। प्रभा मंडल, परों वाले देवदूत और गरजते बादलों का अंकन भी यूरोपीय चित्रकला के प्रभाव का प्रतिफलन था। परन्तु यूरोप की महत्वपूर्ण तैल चित्रकला की तकनीक की ओर मुगल आकृष्ट नहीं हुए। अतैव इस काल में तैल चित्रों का सर्वथा अभाव रहा।

बोध प्रश्न 2

1) **17 वीं शताब्दी के दौरान मुगल चित्रकला में हुए विषयगत परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।**

....

....

....

....

मुगल शैली पर यूरोपीय प्रभाव

2) **किस मुगल शासक एवं राजकुमार ने यूरोपीय चित्रों का संग्रह बनाया था?**

....

....

....

....

3) **मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला के किन-किन भावों को अपनाया?**

....

....

....

....

34.6 दक्खन में चित्रकला

मुगल चित्रकला के विकास से पहले ही 13 वीं शताब्दी के अंत में दक्खन में अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा राज्यों में चित्रकला की एक विशिष्ट शैली क़ा उदय हो चुका था। परन्तु दक्खनी राज्यों में विकसित इस चित्रकला को 16 वीं शताब्दी में सबसे ज्यादा संरक्षण प्राप्त हुआ। 17 वीं शताब्दी में ही मुगल परंपरा के प्रभाव में यह दक्खनी शैली अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई। यहां हम 16 वीं-17 वीं शताब्दी में दक्खनी चित्रकला के विकास को समझने का प्रयास करेंगे।

34.6.1 दरबारी संरक्षण

बहमनी राज्य के उत्तराधिकारी राज्यों ने चित्रकला को विशेष संरक्षण प्रदान किया। इन राज्यों के तहत की गई आरंभिक चित्रकारी 1565-69 के बीच के काल की है। इस चित्रकला के नमूने हमें **तारीफ़-ए-हुसैन शाही** के चित्रण में मिलते हैं जिसका निर्माण और चित्रण अहमदनगर में किया गया था। इसी समय बीजापुर में 1570 ई. के आसपास एक और दक्खनी पाण्डुलिपि का निर्माण और चित्रण हुआ। यह चित्रित पुस्तक **नुजूम-उल-उलूम** है। संभवतः इसका निर्माण अली आदिल शाह के संरक्षण में हुआ, जिसके दरबार में अनेक चित्रकार कार्यरत थे। लेकिन बीजापुर की परंपरा में और संभवतः बहमनी राज्य के सभी उत्तराधिकारी राज्यों के शासकों में इब्राहिम आदिल शाह (1580-1627) का नाम सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है जो स्वंय एक सिद्ध चित्रकार था। 16 वीं शताब्दी के अंत में अहमदनगर

और बीजापुर में **रागमाला** के नाम से चित्रकला की एक नयी परम्परा का उदय हुआ। इब्राहिम आदिल शाह के संरक्षण में यह परम्परा अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई।

दक्खनी चित्रकला का एक और प्रकार विकसित हुआ जिसमें राजकीय जुलूसों को भव्यता के साथ प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार के कई चित्र गोलकुंडा के अब्दुल्ला कुतुब शाह (1626-72 ई.) के काल तक मिलते हैं।

18 वीं शताब्दी में हैदराबाद के आसफ जाही राजवंश के संरक्षण में दक्खनी चित्रकला फली-फूली। पक्षी का शिकार कर लौटते हुए और गोलकुंडा किले के समीप अपने खुशनुमा बगीचे में जाते आजम शाह और निजाम के दरबार के एक कुलीन हिक्मतयार खां का अपना चित्र संग्रह आदि, हैदराबाद की दक्खनी चित्रकारी के कुछ ज्वलंत उदाहरण हैं।

34.6.2 शैली और विषय

दक्खनी परम्परा के निर्माण के क्रम में उस पर कई परम्पराओं का प्रभाव पड़ा। दक्खनी राज्यों के कई शासक ईरानी चित्रकला के प्रशंसक थे और उनके पास चित्रों के अच्छे संग्रह थे। अतः उनके दरबारों में की गई चित्रकारी पर ईरानी शैली का प्रभाव स्पष्ट है। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि इस प्रभाव को ग्रहण करने में कोई एकरूपता और अनुशासन नहीं था। परिणामस्वरूप ईरानी चित्रकला के कई गुणों की बारीकी इनमें नहीं आ पाई। दक्खनी चित्रकला पर मुगल चित्रकला का भी प्रभाव था। दक्खनी और मुगल परम्पराओं के बीच संपर्क कई तरह से स्थापित हुआ। दोनों दरबारों के बीच चित्रकारों के साथ-साथ चित्रों का भी आदान-प्रदान हुआ।

दक्खनी चित्रकला पर बाहरी तत्वों का प्रभाव था परन्तु केवल इसी के आधार पर इनका मूल्यांकन करना संगत नहीं है। दक्खनी चित्रकला के सर्वश्रेष्ठ नमूनों में बाहरी तत्वों के समावेश के फलस्वरूप दर्शन का पुट तथा मौलिकता स्पष्टतः दिखाई देती है। दक्खनी चित्रकला की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं :

- क्रमिक संरचना अर्थात मुख्य आकृति गौण आकृतियों से बड़ी होती थी,
- रंगपट्टिका की सम्पन्नता जिसमें सफेद और सुनहरे रंगों का उपयोग किया जाता था, ऐसा उदाहरण अन्य भारतीय लघु चित्रों में नहीं मिलता है,
- खास गहनों, जैसे हार की पट्टिका का चित्रण,
- खासकर नारी चित्रों के निर्माण में कमरबंद और दुपट्टे में अतिशयोक्तिपूर्ण भंवर, तथा
- विभिन्न कोणों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि मुख्य आकृति के चारों ओर मेहराब बन जाती थी।

रागमाला चित्रकला : तोड़ी रागिनी : दक्खन शैली

रागमाला चित्रकला : भैरव रागिनी : पूजा करती हुई स्त्री

34.7 राजपूत चित्रकला

राजस्थानी चित्रकला का सौन्दर्य बोध भिन्न था। आनन्द के. कुमारस्वामी के अनुसार इस शैली का उदय पूर्ववर्ती प्राक तुर्की परम्पराओं से हुआ और 1600 ई. के आसपास यह अपनी सम्पूर्णता पर पहुंच गया। आरंभ में इसने व्यापक जीवंतता का परिचय दिया हालांकि बाद में इसने मुगल प्रभाव को ग्रहण कर लिया। मुगल सत्ता के बिखरने के बाद यह पुनर्जीवित हुआ और विभिन्न राजपूत राज्यों के संरक्षण में फलने-फूलने लगा। आगे हम राजस्थानी कला की मुख्य शैली और विषयों के साथ-साथ 17 वीं-18 वीं शताब्दी के दौरान इसके कला केन्द्रों की भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

34.7.1 शैली और विषय

आरंभ से ही राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति चित्रण का विशेष महत्व रहा। चित्रों में मुख्य भूमिका प्रकृति की ही होती थी, मनुष्य पूरक के रूप में होता था। इन चित्रों में चित्रित प्रकृति के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं :

- विभिन्न प्रकार के पेड़;
- सघन पुष्प गुच्छों का चित्रण;
- गाते पक्षी और उछल-कूद करते पशु;
- कमल के फूल से आप्लवित नदियां; और
- नीले आसमान से गिरती वर्षा की बूंदे।

रंगों की बहुलता राजस्थानी चित्रकला की महत्वपूर्ण विशेषता है। बादलों के लिए नीला रंग, कड़कती बिजली के स्वर्णिम रंग, और वनस्पति के लिए हरे रंग का उपयोग किया जाता था। इस क्षेत्र के चित्रकारों ने मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों का चुनाव अपने चित्रण में किया है :

- शिकार का दृश्य;
- छवि चित्रण; और
- संगीत की ऋतुएं।

17वीं शताब्दी की राजस्थानी चित्रकला में चित्रों को विभिन्न खानों में बांटा जाता था जिसमें स्थान विशेष को विकल कोणों और झुकानों में विभक्त किया जाता था और इनका उपयोग आकृतियों और समूहों के रूप में होता था।

34.7.2 मुख्य केन्द्र

क) **मेवाड़ स्कूल** : राजस्थानी चित्रकारों के समूह में निसारदीन (1606 ई.) का घराना सर्वप्रथम घराना माना जाता है। बाद में साहिबदीन ने 1627 और 1648 ई. के बीच इसी परम्परा को आगे बढ़ाया। इस काल में मेवाड़ स्कूल अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया। सैंकड़ों की तादाद में चित्र श्रृंखलाएं बनाई गईं जिनमें मिथकों के साथ-साथ जीवन के व्यापक आयामों का चित्रण किया गया। जगत सिंह प्रथम (1628-52 ई.) के संरक्षण में **नायक भेद नामक** लंबी चित्र श्रृंखला बनाई गई। कई चित्रकारों ने मिलकर इस काव्यात्मक और भावनात्मक शैली में प्रस्तुत किया। परन्तु अगले पचास वर्षों में मेवाड़ की कला में मुगल कला का प्रभाव बढ़ता गया और यह नीचे दबती चली गई।

ख) **बूंदी स्कूल** : इसका इतिहास भी समानान्तर रूप से चलता है। परन्तु इसके इतिहास में (1620-35 ई. और 1680-1700 ई.) इन दो कालों का विशेष महत्व है। 18वीं शताब्दी के दौरान बूंदी कला में एक नया मोड़ आया। हालांकि विषय और तकनीक में यहां मुगल

मेवाड़ शैली
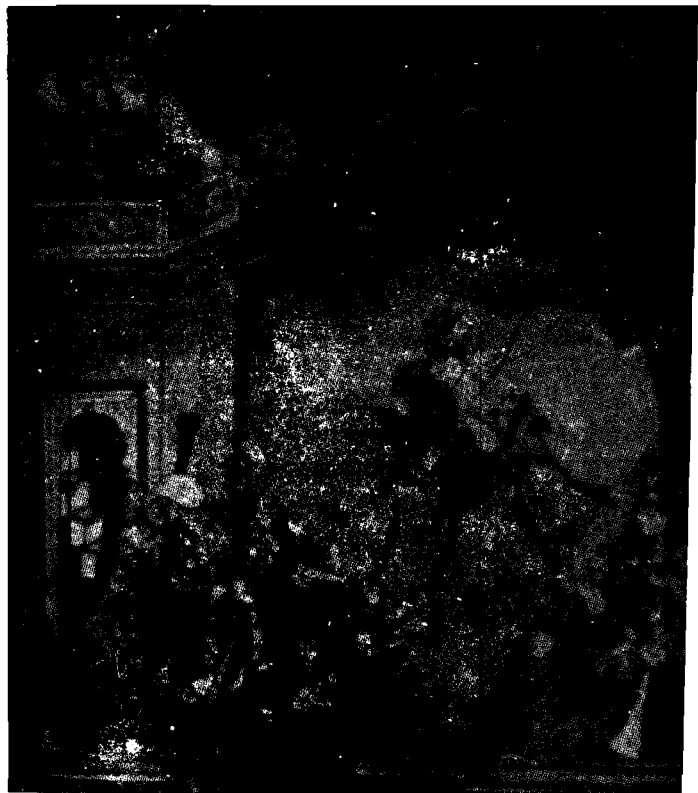
बूंदी शैली

कला का अनुसरण ही किया गया परन्तु अभिव्यक्ति शैली इनकी अपनी रही। नारी के सौंदर्य चित्रण पर विशेष बल दिया जाने लगा।

ग) **किशनगढ़ स्कूल** : किशनगढ़ स्कूल में संगीतबद्धता और संवेदनात्मकता थी। 18वीं शताब्दी के प्रारंब्ध (1699-1764 ई.) में नागरी दास के नाम से प्रसिद्ध महाराजा सांवत सिंह ने इसे प्रोत्साहन दिया। हालांकि राजस्थान के सभी दरबारों में पनपी चित्रकलाओं पर मुगल काल का प्रभाव था परन्तु किशनगढ़ की कला में हिन्दु भक्ति का तत्व बचा रहा। सांवत सिंह के संरक्षण में राधा-कृष्ण के प्रेम को आधार बनाकर अनेक चित्र बनाए गए। किशनगढ़ के चित्रों में कुशल कलाकार निहाल चंद के चित्र अनुपम हैं। किशनगढ़ की नारी की तीखी नाक, गोल आंखे और धनुषाकार मुख के चित्रण से राजस्थानी चित्रकला में एक नई परम्परा का आरंभ हुआ।

किशनगढ़ शैली

34.8 मुगलकालीन ललित कलाएं

16 वीं-18 वीं शताब्दी में मुगलों के द्वारा शासित क्षेत्र की अपेक्षा प्रान्तीय क्षेत्रों में ललित कला का ज्यादा विकास हुआ। परन्तु ललित कलाओं के ऐतिहासिक विकास की सूचना कम ही मिलती है। आगे जो वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है वह इधर-उधर बिखरी छुट-पुट सूचनाओं पर आधारित है।

34.8.1 संगीत

इस काल में क्षेत्रीय राज्य संगीत अध्ययन और विकास के केन्द्र बन गए। दक्षिण भारत में 16 वीं शताब्दी के आसपास जनक और जन्य रागों जैसे मूल और मूलाश्रित रागों का प्रचलन था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख **स्वरमेल कलानिधि** नामक ग्रंथ से मिलता है। इसका लेखन 1550 ई. में कोर्डबिदु (आन्ध्र प्रदेश) के रामामात्य नामक लेखक ने किया था। इसमें 20 **जनक** और 64 **जन्य** रागों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् सोमनाथ ने 1609 ई. में **रागविबोध** की रचना की जिसमें उत्तर भारत की कुछ शैलियों का समावेश किया गया है। 17 वीं शताब्दी के मध्य में तंजाउर में बेंकटामकिन ने **चतुरबंडी** प्रकाशिका नामक एक प्रमुख विवेचना संगीत पर लिखी (लगभग 1650 ई.)। यह पुस्तक कर्नाटक संगीत का आधार

ग्रंथ बन गई। उत्तर भारत का संगीत मुख्यतः भक्ति आंदोलन से प्रभावित था। 16 वीं शताब्दी के संत कवियों की रचनाएं अधिकांशतः संगीत पर आधारित होती थीं। स्वामी हरिदास ने वृंदावन में संगीत को खूब बढ़ावा दिया उन्हें अकबर के प्रसिद्ध दरबारी संगीतकार **तानसेन** का गुरु भी माना जाता है। तानसेन स्वयं उत्तर भारतीय संगीत का महान उद्गाता था। उसे **मियां की मल्हार, मियां की तोडी,** और **दरबारी** जैसे कुछ प्रमुख रागों का जन्मदाता माना जाता है। ग्वालियर के राजा मान सिंह (1486-1517 ई.) ने उत्तर भारत के संगीत की एक प्रमुख शैली ध्रुपद के विकास और परिष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

18 वीं शताब्दी में मुगल सम्राट मौहम्मद शाह के दरबार में संगीत की उत्तर भारतीय शैली को अद्भुत प्रोत्साहन मिला। उसके दरबार के दो संगीतकार, सदारंग और अदारंग **ख्याल** गायकी के महान प्रवर्तक थे। इसी समय **तराना, दादरा** और ग़ज़ल जैसे संगीत के नए रूप सामने आए। इसके अतिरिक्त दरबारी संगीत में लोक संगीत को भी शामिल किया गया। इस श्रेणी में **ठुमरी** और टप्पा का उल्लेख किया जा सकता है। **ठुमरी** में लोक संगीत के मानदंडों का उपयोग होता है और **टप्पा** पंजाब के ऊँटवानों द्वारा गाये जाने वाले संगीत से विकसित हुआ।

एक बात गौर करने की है कि दक्षिण संगीत काफी कुछ नियमबद्ध और ग्रंथाधारित था परन्तु उत्तर भारतीय संगीत में इस परंपरा का अभाव होने से इसमें काफी स्वच्छंदता पाई जाती थी। इस कारण उत्तर भारत में विभिन्न रागों को मिला कर अनेक प्रयोग किए गए। आज भी उत्तर भारतीय संगीत में यह उदारता मौजूद है।

34.8.2 नृत्य और नाटक

मध्यकालीन नृत्य और नाटक के संबंध में तत्कालीन ग्रंथों में बहुत कम वर्णन मिलता है। संगीत, नृत्य और नाटक तथा सृजनात्मक साहित्य की प्रमुख पुस्तकें भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में मुख्य स्रोत के रूप में उपलब्ध हैं।

इससे संबंधित पुस्तकें मुख्य रूप से उड़ीसा, दक्षिण भारत और मुगल सम्राट मौहम्मद शाह के दरबार में संग्रहीत की गईं। उड़ीसा में 17 वीं शताब्दी के दौरान महेश्वर महापात्र और रघुनाथ द्वारा क्रमशः दो पुस्तकें **अभिनय चंद्रिका** और **संगीत दामोदर** की रचना की गई। दक्षिण भारत में **आदि भारतम, भारत रत्नव**, तुलाजराजा (1729-1735 ई.) कृत **नाटयवेदागम्** और बालराम बरमन (1753-1798 ई.) कृत **बलराम भारतम्** प्रमुख ग्रंथ हैं। मौहम्मद शाह के दरबार में नृत्य और संगीत पर **संगीत मलिका** नामक ग्रंथ लिखा गया।

बोध प्रश्न 3

1) दक्खनी चित्रकला की मुख्य विषयवस्तु पर 50 शब्दों में टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

2) राजस्थानी चित्रकला में चित्रित प्रकृति-चित्रण के तीन तत्वों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

3) राजपूत चित्रकला के दो प्रमुख संरक्षण केन्द्रों का नाम बताइए?

....

....

....

....

....

34.9 सारांश

इस इकाई में आपने मुगलों के अधीन चित्रकला और ललितकला के विकास का अध्ययन किया। इस काल की कलाओं में कई प्रकार के तत्वों का मिश्रण हुआ। चित्रों में ईरानी प्रभाव के साथ-साथ देशी परम्पराओं का भी उपयोग हुआ। 17 वीं शताब्दी के दौरान इस पर यूरोपीय चित्रकला का भी प्रभाव पड़ा।

संगीत, नृत्य और नाटक को भी राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। तानसेन ने अकबर के दरबार की शोभा बढ़ाई और संगीत को असीम ऊंचाई तक पहुंचा दिया। तुलनात्मक दृष्टि से इस काल में नृत्य और नाटक का विकास आरंभिक अवस्था में था।

34.10 शब्दावली

भित्ति चित्र : दीवार पर बने चित्र।

पट्टिका : चित्रकारी के लिए चित्रकार द्वारा रंग रखने और मिलाने के लिए उपयोग की जाने वाली चौकोर पट्टिका।

आरेख : रेखा चित्र।

मुलम्मासाज : चित्रों के ऊपर सोने की एक लगभग पारदर्शी परत चढ़ाने वाले।

छवि चित्रण : विशिष्ट व्यक्तियों के चेहरे अथवा आदमकद शरीर का चित्रण।

34.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 34.2.2
2) देखिए उपभाग 34.3.1
3) देखिए उपभाग 34.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 34.4.2
2) जहांगीर और दारा शिकोह। देखिए भाग 34.5
3) प्रभामंडल, परों वाले देवदूत और गरजते बादल। देखिए भाग 34.5

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 34.6.2
2) देखिए उपभाग 34.7.1
3) उदाहरणस्वरूप मेवाड़ और बूंदी। देखिए उपभाग 34.7.2

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

इरफान हबीब (संपादक) : **मध्यकालीन भारत**, प्रथम भाग

के.ए. नीलकंठ शास्त्री : **दक्षिण भारत का इतिहास**

जी.डी. शर्मा : **मध्यकालीन भारतीय सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाएं**

ए.जे. कैसर : **इंडियन रेस्पांस टु यूरोपियन टैक्नॉलोजी**

पर्सी ब्राउन : **इंडियन पेंटिंग्स**

एम.बी. बीच : **मुगल एंड राजपूत पेंटिंग्स**

एम.पी. वर्मा : **आर्ट एंड मैटीरियल कल्चर इन द पेंटिंग्स ऑफ अकबर्स कोर्ट।**